# संस्कृत शिक्षा



श्रीअरविम्‌ बृजविहारी शर्म्मा

# संस्कृत शिक्षा

सम्पादक :—
श्रीअरिवम् बृजविहारी शर्म्मा
काव्यव्याकरण स्मृति तीर्थः
गोल्ड म्याडालिष्ट
अध्यक्षः इम्फाल टोल (गभर्णमेण्ट)

प्राप्तिस्थानम्
ओः केः ष्टोर
बुक सेलरस एण्ड पब्लिसरस
इम्फाल।



मूल्यम् —

प्रकाशकः

ओः केः ष्टोर

बुक सेलरस एण्ड पब्लिसरस

इम्फाल।

१९६८ खृष्टाब्दः

प्रथम संस्करणम्

पुस्तकसंख्या ११००

मुद्रणालयः मणिपुर गीता प्रेस, शिजमै, इम्फाल।

# भूमिका

स्वदेशीय सुधिवर्गान् प्रति सविनयं निवेदयामि यत् मणिपुरीयाणां उच्चविद्यालयीयसप्तमकक्षीयसंस्कृतविद्यार्थिनां संस्कृतपठने सौकर्य्याय संस्कृतानुरागिना माननीय श्रीतेलेम् आवीर सिंहेन भद्रमहोदयेन प्रोत्साहितेन मूढेनापि मया नाम्ना "संस्कृत शिक्षा" पुस्तिकैका संकलिता।

अस्याः पठनं पाठनंवा यदि कृपया स्यात् तर्हि मम परिश्रमस्य सफलता भवेत्। अत्र यः कोऽपि दोषः दृश्यते तं सानुकम्पा भवन्तो ज्ञापयन्तु इतिशम्।

प्राश्रवः
श्रीअरिवम् बृजविहारी शर्म्मा

# सूचिपत्रम्

| विषय :— | | पृष्ठा |
|---|---|---|

# संस्कृत शिक्षा

## প্রথম-ভাগঃ

देवनागर-वर्णपरिचयः

দেবনাগর-বর্ণ-পরিচয়

( Devanagari characters )

संस्कृत-वर्णमाला

সংস্কৃত বর্ণমালা

( Sanskrit Alphabet )

स्वरवर्णाः ( Vowels )

স্বরবর্ণ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अ | आ | इ | ई | उ | ऊ |
| অ | আ | ই | ঈ | উ | ঊ |
| ऋ | ॠ | ऌ | [ॡ] | ए | ऐ |
| ঋ | ৠ | ঌ | [ৡ] | এ | ঐ |
| | | ओ | औ | | |
| | | ও | ঔ | | |

### ह्रस्वाः स्वराः ( Short vowels )
হ্রস্ব স্বর

अ इ उ ऋ ऌ

### दीर्घाः स्वराः ( Long vowels )
দীর্ঘ স্বর

आ ई ऊ ॠ [ॡ] ए ऐ ओ औ

দ্রষ্টব্য :—অ, আ, ই, ঈ, উ, ঊ, ঋ, ৠ, ঌ, [ ৡ ]–স্বরবর্ণশিং অসিবু "সমানাক্ষর" কৌই ; অমসুং—এ, ঐ, ও, ঔ–স্বরবর্ণশিং অসিগী মমিং "সন্ধ্যক্ষর" কৌই।

## व्यञ्जनवर्णाः ( Consonants )
ব্যঞ্জনবর্ণ

### स्पर्शवर्णाः ( Mutes or Contact letters )
স্পর্শবর্ণ

### कवर्गः ( Gutturals )
কবর্গ—কণ্ঠ্যবর্ণ

| क् | ख् | ग् | घ् | ङ् |
|---|---|---|---|---|
| ক | খ | গ | ঘ | ঙ |

चवर्गः ( Palatals )

চবর্গ—তালব্যবর্ণ

च्　छ्　ज्　झ्　ञ्

চ　ছ　জ　ঝ　ঞ

टवर्गः ( Cerebrals or Linguals )

টবর্গ – মূর্দ্ধন্যবর্ণ

ट्　ठ्　ड्　ढ्　ण्

ট　ঠ　ড　ঢ　ণ

तवर्गः ( Dentals )

তবর্গ—দন্ত্যবর্ণ

त्　थ्　द्　ध्　न्

ত　থ　দ　ধ　ন

पवर्गः ( Labials )

পবর্গ—ওষ্ঠ্যবর্ণ

| प् | फ् | ब् | भ् | म् |
| --- | --- | --- | --- | --- |
| প | ফ | ব | ভ | ম |

अन्तःस्थवर्णाः ( Semi-vowels or Intermediates )

অন্তঃস্থবর্ণ

| य् | र् | ल् | व् |
| --- | --- | --- | --- |
| য | র | ল | ব |

ऊष्मवर्णाः ( Spirants )

ঊষ্মবর্ণ

| श् | ष् | स् | ह् |
| --- | --- | --- | --- |
| শ | ষ | স | হ |

### अयोगवाहाः

অযোগবাহ

| | |
|---|---|
| ं ং | ( अनुस्वारः ) |
| ः ঃ | ( विसर्जनीयः, विसर्गः ) |
| ᳵक् | ( जिह्वामूलीयः ) |
| ᳶप् | ( उपध्मानीयः ) |
| ँ ঁ | ( अनुनासिकः ) |

### स्वरवर्णानां प्रयोगे आकाराः

ा ि ी ु ू ृ ॄ

া ি ী ু ূ ৃ ৄ

ॢ े ै ो ौ

ৢ ে ৈ ো ৌ

### स्वरसंयोगे आकाराः

क का कि की कु कू कृ कॄ

ক কা কি কী কু কূ কৃ কৄ

कॢ के कै को कौ

কৢ কে কৈ কো কৌ

কৃ খৃ গৃ ঘৃ তৃ দৃ ধৃ

কৃ খৃ গৃ ঘৃ তৃ দৃ ধৃ

নৃ পৃ বৃ মৃ শৃ সৃ হৃ

নৃ পৃ বৃ মৃ শৃ সৃ হৃ

---

## সংযুক্তবর্ণাঃ

ক্য খ্য গ্য ঘ্য চ্য ছ্য জ্য ঝ্য

ক্য খ্য গ্য ঘ্য চ্য ছ্য জ্য ঝ্য

ট্য ঠ্য ড্য ঢ্য ণ্য ত্য থ্য দ্য

ট্য ঠ্য ড্য ঢ্য ণ্য ত্য থ্য দ্য

ধ্য ন্য প্য ফ্য ভ্য ম্য য্য ল্য

ধ্য ন্য প্য ফ্য ভ্য ম্য য্য ল্য

ব্য শ্য ষ্য স্য হ্য

ব্য শ্য ষ্য স্য হ্য

ক্র গ্র ঘ্র জ্র ট্র ত্র দ্র ধ্র ন্র

ক্র গ্র ঘ্র জ্র ট্র ত্র দ্র ধ্র ন্র

প্র ব্র ভ্র ম্র ব্র শ্র স্র হ্র

প্র ব্র ভ্র ম্র ব্র শ্র স্র হ্র

র্ক র্গ র্চ র্জ র্ণ র্ত র্থ র্দ

র্ক র্গ র্চ র্জ র্ণ র্ত র্থ র্দ

র্ধ র্প র্ব র্ভ র্ম র্য র্শ র্হ

র্ধ র্প র্ব র্ভ র্ম র্য র্শ র্হ

क्ल ग्ल प्ल ब्ल म्ल ब्ल श्ल ह्ल
ক্ল গ্ল প্ল ম্ল ফ্ল ব্ল শ্ল হ্ল

क्व ग्व छ्व ज्व ण्व त्व थ्व द्व
ক্ব গ্ব ছ্ব জ্ব ণ্ব ত্ব থ্ব দ্ব
ध्व न्व ल्व व्व श्व ष्व स्व ह्व क्ष्व
ধ্ব ন্ব ল্ব ব্ব শ্ব ষ্ব স্ব হ্ব ক্ষ্ব

क्न ग्न घ्न त्न प्न म्न श्न स्न ह्न
ক্ন গ্ন ঘ্ন ত্ন প্ন ম্ন শ্ন স্ন হ্ন
क्म ग्म ङ्म च्म ज्म ट्म ण्म त्म ध्म न्म
ক্ম গ্ম ঙ্ম চ্ম জ্ম ট্ম ণ্ম ত্ম ধ্ম ন্ম
प्म भ्म ल्म श्म ष्म स्म ह्म क्ष्म
প্ম ভ্ম ল্ম শ্ম ষ্ম স্ম হ্ম ক্ষ্ম

कं ग चं टं तं दं वं लं सं
কং গং চং টং তং দং বং লং সং
कः गः जः धः पः बः सः हः
কঃ গঃ জঃ ধঃ পঃ বঃ সঃ হঃ

---

## विविधव्यञ्जनसंयोगाः

ङ्क ङ्ख ङ्ग ङ्घ ञ्च ञ्छ ञ्ज ञ्झ

ঙ্ক ঙ্খ ঙ্গ ঙ্ঘ ঞ্চ ঞ্ছ ঞ্জ ঞ্ঝ

ञ्झ ण्ट ण्ठ ण्ड ण्ढ ण्ण न्त न्थ

ঞ্ঝ ণ্ট ণ্ঠ ণ্ড ণ্ঢ ণ্ণ ন্ত ন্থ

न्द न्ध न्न न्प न्फ न्ब न्भ न्म

ন্দ ন্ধ ন্ন ন্প ন্ফ ন্ব ন্ভ ন্ম

श्क ष्क श्ख ष्ख द्ग द्घ श्च श्छ

শ্ক ষ্ক ষ্‌খ ষ্খ দ্গ দ্ঘ শ্চ শ্ছ

ज्ज ज्झ ट्ट ट्ठ क्ष्ण ष्ण ह्न त्त

জ্জ জ্ঝ ট্ট ট্ঠ ক্ষ্ণ ষ্ণ হ্ন ত্ত

ष्थ ब्द ष्व ष्प स्प ष्फ स्फ ह्म क्ष

ষ্থ ব্দ ক্ক ষ্প স্প ষ্ফ স্ফ হ্ম ক্ষ

क्क क्ख ग्ग च्च च्छ ज्ज ट्ट त्त त्थ

ক্ক ক্‌খ গ্‌গ চ্চ চ্ছ জ্জ ট্ট ত্ত ত্থ

द्द द्ध प्प ल्क ल्प ल्भ ग्ध ग्भ

দ্দ দ্ধ প্প ল্ক ল্প ল্‌ভ গ্ধ গ্‌ভ

क्त प्त त्क त्प त्स

ক্ত প্ত ৎক ৎপ ৎস

ङ्क्य ङ्ग्य ङ्घ्य न्त्य न्द्य न्ध्य म्न्य म्ब्य ल्क्य स्क्य श्च्य
ঙ্ক্য ঙ্গ্য ঙ্ঘ্য ন্ত্য ন্দ্য ন্ধ্য ম্ন্য ম্ব্য ল্ক্য স্ক্য শ্চ্য

ष्ट्य ष्ठ्य स्त्य त्त्य द्व्य द्ध्य ह्म्य क्त्य क्ष्य त्स्य
ষ্ট্য ষ্ঠ্য স্ত্য ত্ত্য দ্ব্য দ্ধ্য হ্ম্য ক্ত্য ক্ষ্য ৎস্য

क्त्र च्छ्र न्त्र न्द्र म्ब्र ङ्क्र ष्ट्र द्भ्र स्त्र त्प्र
ক্ত্র চ্ছ্র ন্ত্র ন্দ্র ম্ব্র ঙ্ক্র ষ্ট্র দ্ভ্র স্ত্র ৎপ্র

क्त्व च्छ्व ज्ज्व त्त्व द्द्व द्ध्व
ক্ত্ব চ্ছ্ব জ্জ্ব ত্ত্ব দ্দ্ব দ্ধ্ব

न्त्व स्त्व प्त्व ष्प्व ष्ट्व
ন্ত্ব স্ত্ব প্ত্ব ষ্প্ব ষ্ট্ব

र्च्छ र्द्द र्म्म
র্চ্ছ র্দ্দ র্ম্ম

न्त्य स्त्य
ন্ত্য স্ত্য

**संख्या**

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ ०
১ ২ ৩ ৪ ৫ ৬ ৭ ৮ ৯ ০

বাকুং

১। দেবনাগরি ময়েক্তা ইয়ু :—

র, ব, র, ক ; ণ, ন ; উ, ড ; চ; ট, ঢ ; ঝ, ফ, ভ ; ম, স ; ৯, ল ; ই, দ ; য, ধ ; প, য ;

২। দেবনাগরি ময়েক্তা ইয়ু :—

অ, শ্র ; খ, স্ব ; ক্ত, ত্র ; দশ, দ্ধ, দ্ব ; ক্ষ, হ্ব ; চ্ছ, শ্ছ ; ত্র, ক্র ; ক্ত, ক্তু ; রু, ক্ল ; স্ত্র, স্ত্র ; জ্ঞ, ঞ্জ।

৩। মথাদা ইরিবা শব্দশিংগী উচ্চারণগী খেন্নবদু বাংলা হায়য়ু।

কোষঃ, কোশঃ ; কুন্দে, কুণ্ডে ; শারদা, সারদা ; বিষস্য, বিসস্য ; যজ্ঞে, জজ্ঞে ; ভটম্, ভতম্ ; বিষ্টরে, বিস্তারে ; শর্ব্বঃ, সর্ব্বঃ ;

৪। দেবনাগরি ময়েক্তা ইয়ু :—

(ক) অজ্ঞাত কুলশীলস্য বাসো দেয়োনকস্যচিৎ।
মার্জ্জারস্যহি দোষেন হতোগৃধ্রো জরদ্‌গবঃ॥

(খ) সহিগগনবিহারী কল্মষধ্বংসকারী
দশশতকরধারী জ্যোতিষাং মধ্যচারী।
বিধুরপি বিধিযোগাদ্ গ্রস্যতে রাহুণাসৌ
লিখিতমপি ললাটে প্রোজ্‌ঝিতুং কঃ সমর্থঃ॥

৫। বারি, বিধিঃ, বিধুঃ, আশা, লতা, উমা, রমা, রামা, গৃহম্, কাননম্, বনম্, অনলঃ, অনিলঃ, পবনঃ, ভানুঃ, শশী, রবিঃ, সূর্য্যঃ, কমলম্, পদ্মম্, মতিঃ, গতিঃ, স্থিতিঃ, ধৃতিঃ, কান্তিঃ, ভূতিঃ।

প্রীয়তাং পুণ্ডরীকাক্ষঃ সর্বযজ্ঞেশ্বরো হরিঃ।
তস্মিং স্তুষ্টে জগৎতুষ্টং প্রীণিতে প্রীণিতং জগৎ।

৬। দেৱনাগর মযেক্তা ইয়ু :—

১০৬. ৩০৯, ৭৬৩, ২৪৭, ৫৫৬, ১২৭২, ৪০৭৫, ৫০৬৮; ৯০১২, ১০৭০৩৮।

---

## উৎপা।

क्ष् (= क् + ष्)
ज्ञ् (= ज् + ञ्)
क्य् (= क् + य्)
क्त् (= क् + त्)
र्क् (= र् + क्)
क्र् (क् = र्)
त्त्व् (= त् + त् + व्)
न्त्र्य् (= न् + त् + र् + य्)

} করম করম্বা ব্যঞ্জন বর্ণনা তিন্ন-থ্রগা করম্বা মশক ওইখিবগে থগুনবা উপায়।

---

## पुंलिङ्ग विशेष्यपदानि

गजः आम्रः शरभः ईश्वरः शंकरः रसिकः इन्द्रः

नरः हरिः भूपतिः सुधीः साधुः आत्मा लक्ष्मणः

अनलः काकः पिता पर्वतः समुद्रः मर्कटः भानुः

গজঃ—শামু। আম্রঃ—হৈনৌ পাশ্বী। নরঃ—নিপা।

মর্কটঃ—মোং। অনলঃ—মৈ।

## स्त्रीलिङ्ग विशेष्यपदानि

गदा आज्ञा विजया जया सेना

कान्ता माया यमुना दक्षिणा कुन्ती

लता मथुरा सन्ध्या मतिः राधा

ललना द्वारका दुर्गा गतिः चन्द्रा

गौरी अयोध्या गया धृतिः कान्तिः

सरित् रजनी गङ्गा गीतिः प्रीतिः

बालिका ललिता तडित् स्मृतिः तारा

মাতা—মমা। বালিকা—সুপীমচা। রজনী—অহিং।

লতা—উরী। তড়িৎ—নোংথাং।

## क्लीबलिङ्ग विशेष्यपदानि

पुष्पम् जीवनम् निमित्तम् पुराणम् पापम् दानम्

फलम् सुखम् कुलम् चरित्रम् गमनम् स्नानम्

पत्रम् दुःखम् धनम् नेत्रम् चक्षुः तपः

काननम् जलम् मुखम् पुण्यम् श्रोत्रम् श्राद्धम्

দর্শনম্  মরণম্  যৌবনম্  আকাশম্  দুগ্ধম্  মধু,
স্মরণম্  জননম্  বৈভবম্  দধি  ঘৃতম্  জগৎ

মরণম্—শিবা ; দুগ্ধম্—যঙোম অনৌবা ; ঘৃতম্—ঘী।
জননম্—পোকপা ;  আকাশম্—অতিয়া।

---

## বাহং

১। মথাদা ইরিবা শব্দশিংসিগী অর্থ নরোনদা তাকউ :—

লতা,  আশা  পদ্মম্  মুখম্,  মর্কট:,
পিতা,  পর্ব্বত:,  অনল:,  হরি: ।

২। মথক্তী শব্দশিংগী রূপ হায়য়ু।

৩। সংস্কৃততা ওস্থোকউ :—

বন. শিবা, পোকপা; পেনবা, ভুরেল, হুপীমচা,
অহিং,  নোংথাং.  থরানমিচাক
নিংথৌ,  হুমিৎ ।

---

# संस्कृत शिक्षा

## प्रथमः परिच्छेदः

### प्रथमः पाठः

#### विशेष्य-विशेषणप्रयोगः

( १ )

सुन्दरः पुरुषः। प्रसिद्धः पण्डितः। शीतलः पवनः। विशालौ वृक्षौ। धार्मिकौ नरौ। कठिनाः प्रश्नाः। निर्म्मलाः आदर्शाः। सच्चरित्राः बालकाः। दुष्टाः सिंहाः।

( २ )

सुन्दरी नारी। श्वेता गौः। शोभना मूर्त्तिः। कुसुमिता लता। निष्फला चेष्टा। विचित्रा माला। विशाला राजधानी। निर्मला ज्योत्स्ना। गभीरा नदी।

( ३ )

गाङ्गं वारि (जलम्)। नीलं पद्मम्। मधुरं वचनम्। गहनं काननम्। सुरभि चन्दनम्। दुर्बलं शरीरम्। कुत्सितं चरित्रम्। छिन्नं वस्त्रम्। क्षरितं रुधिरम्।

## (৪)

अनुपमः पुत्रस्य स्नेहः । चपलं बालकम् । तीक्ष्णेन कुठारेण । दरिद्राय जनाय । निर्जनात् स्थानात् । दयालोः नरपतेः । महति भुधरे । हें मुढ़ मानुष । पुष्पितासु लतासु । कम्पितेषु कमलेषु । कदलीफलानि सुमिष्टानि भवन्ति । पतिव्रतायाः सीतायाः जीवनं दुःखमयम् । महर्षेः कश्यपस्य पवित्रे आश्रमे ऋषि-कुमाराः वर्तमानाः । तीक्ष्णेन खड्गेन शिरांसि छिन्नानि । दुर्भिक्षे दरिद्राणां जनाना दुःखं भवति । युधिष्ठिरः धार्मिकः राजा *

---

* সংস্কৃতকী করিগুম্বা রাহৈ অমদা বিশেষ্য অমসুং বিশেষণ অনী পুম্না য়াওরবদি মাদুবু শীজিন্নবা মতমদা বিশেষ্যগী ওইরিবা লিঙ্গ, বিভক্তি অমসুং বচন অদুগা চপমান্নবা লিঙ্গ, বিভক্তি অমসুং বচন পুম্নমক বিশেষণ পদদসু হাপকনি। বিশেষ্য পদ অদুগী লিঙ্গ, বিভক্তি অমসুং বচন অদু করিনো মুম্না থল্লগা বিশেষণ পদদসু মা ( বিশেষ্য ) গী লিঙ্গ, বিভক্তি অমসুং বচনগা মান্না হাপকনি। বিশেষ্য অমসুং বিশেষণ অনী অদু লিঙ্গ, বিভক্তি অমসুং বচন মান্নদবা য়ারোই। অদুম্নদি ওইরগা বিশেষণ পদগী ঙেংতুনা বিশেষ্য পদদা মান্নহনবদি চুমদে। বিশেষ্য পদগী মতুঙ ইন্না বিশেষণ পদদা শেমগদবনি। মদুদি ঃ—

বিশেষ্যস্য হি যল্লিঙ্গং বিভক্তি বচনেচ যে।<br>
তানি সর্ব্বাণি যোজ্যানি বিশেষণপদেষ্বপি ॥

শব্দার্থঃ

প্রসিদ্ধঃ—অকাওবা। বিশালঃ—অচৌবা।
দ্রুমঃ—নাপল ভৌবা। অনুপমঃ—মপা (চাংদম্নিংঙাই) লৈতবা।
গভীরা—অরূবা। নীলবর্ণ—অশৌবা।
ছিন্নম্—শেগায়বা। কুঠারেণ—শীঙজঙনা।
স্থবিনম্—চেষ্টশ্রবা। ভূধরে—চীঙদা।

অনুশীলনী

১। সংস্কৃততা হন্দোকউ ঃ—

অকাওবা নিপা। মপা লৈতবা পণ্ডিত। নাপল ভৌরিবা অতাং। কঞ্জবা লৈরাংনা। কওবা মরূপকা। অশাংপা থম্বালগী। লায়রবা মীশিংদা। অপঙবা মীরু। অশোবা মকমদা। ধর্ম্ম লৈব নিপাদা।

২। লতা, বারি, আত্মন্ অমসুং মনস্ শব্দগী দ্বিতীয়া ষষ্ঠী অমসুং সম্বোধনগী রূপ ইয়ু।

---

## द्वितीयः पाठः

### कर्तृवाच्ये लट्-प्रयोगः

ईश्वरः सृजति। अनलः दहति। कोकिलः रौति। अश्वः धावति। छात्राः पठन्ति। भक्ताः जपन्ति। भ्रमराः गुञ्जन्ति। गायकाः गायन्ति। नर्तकाः नृत्यन्ति। गावः चरन्ति। पद्मानि विकसन्ति। नद्यः प्रवहन्ति।

## कर्म्मपदप्रयोगः

माता लालयति पुत्रम् । भृत्याः सेवन्ते राजानम् । खादन्ति बालकाः फलम । प्रभुं अनुसरन्ति सेवकाः । पूजयामि गुरुमहम् । नमामः पितरौ वयम् । सत्यं वदन्ति साधवः । त्वं किं वदसि । चन्द्रं पश्यति बालकः । हन्ति व्याधः सदा मृगम् । एकः चन्द्रः तमो हन्ति । करोति साधुसमागमम् । मूढ़ः नजहाति धनागमतृष्णाम् । दुग्धं पिबति शिशुः । पुष्पं चिनोति बालिका । *

---

* বর্ত্তমান কালগী ক্রিয়াবু সংস্কৃতনা হন্দোকপা তারবদি ধাতুগী মথাদা "লট" বিভক্তি হপ্লগা হন্দোকদবনি। মতুদি ঐ চিঠি পাঙি— অহং পত্রং পঠামি। মহাক চাক থোংলি— সঃ ওদনং (অন্নং) পচতি। নহাক করি য়েংলি—ত্বং কিং পশ্যসি অসিনচিংবা।

মাহৈ পরেং অনবু কর্ত্তৃবাচ্যগী মরোলদা শীজিন্নগে হায়রবদি কর্ত্তৃকারকপু প্রথমা বিভক্তিনা থোকপা পদ, কর্ম্মকারকপু দ্বিতীয়া বিভক্তিদা থোকপা পদ ওইহনগদবনি। কর্ত্তৃকারককী বচন (মশীঙ) গী মতুং ইন্না ক্রিয়া পদগী বচন হাপকনি।

प्रयोगे कर्त्तृवाच्यस्य कर्त्तरि प्रथमा भवेत् ।
क्रियापदं कर्त्तधीनं द्वितीया कर्म्मकारके ॥

## শব্দার্থঃ

| | |
|---|---|
| সৃজতি—শেম্মি। | লালয়তি—শেনবীরি |
| দহতি—চাক্লি (চাকই) | সেবন্তে—সেবা তৌরি। |
| রৌতি—খোংলি। | খাদন্তি—চারি। |
| ধাবন্তি—চেল্লি। | অনুসরন্তি—মতুং ইল্লি। |
| পঠন্তি—পারি। | পূজয়ামি—পূজা তৌরি। |
| জপন্তি—জপ তৌরি। | নমামঃ—খুরুমজরি। |
| গুঞ্জন্তি—ওংলি। | বদন্তি—হায়রি। |
| গায়ন্তি—ঈশৈ শক্লি। | পশ্যতি—য়েংলি। |
| নৃত্যন্তি—জগোই শারি | হসন্তি—হাৎলি (মাঙহল্লি)। |
| খাদন্তি—চারি। | করোতি—তৌরি। |
| বিকসন্তি—শাৎলি। | জহাতি—থাদোক্লি। |
| প্রবহন্তি—চেন্থরি। | বিনীতি—হেক্লি। |
| ব্যাধঃ—শাতানবনা। | নমঃ—অমস্বু। |

## অনুশীলনী

১। সংস্কৃততা হন্দোকউঃ—

ছাত্রশিংনা গুরুবু খুরুম্মি। ঐখোয়না গুরুবু খুরুমজরি। মহাক্না নহাকপু য়েংলি। নখোয়না চাক চারি। তুপীমচাশিংনা জগোই শারি। রামনা লাইরিক তক্ষমশংদা চংলি। অঙাং-শিংনা চেল্লি। য়ো শিংনা উচৈ চারি। তুপীনা মপুরোইববু পূজা তৌরি।

ঐহাক য়ুমদা চৎলি। লমচৎ কজবা অঙাংশিংনা লাইরিক পারি। মৈনা য়ুম চাক্লি। মুমিৎনা অমম্ববু মাঙহল্লি। অপঙবনা অশাওববু খাদোক্কে। মহাক্না করি হায়রি ?

---

## তৃতীয়ঃ পাঠঃ

### কর্ত্তৃবাচ্যে লোট্ *

সত্যং বদ। ধর্ম্মং চর। ভজ সাধুসমাগমম্। পুণ্যং কুরু। ধনং দেহি দরিদ্রায়। ত্যজদুর্জন সংসর্গম্। আনয় আসনম্। আগচ্ছন্তু ভবন্তঃ। অহং করবাণি। মাকুরু ধন-জনযৌবনগর্বম্। মনসি বিচারয় বারং বারম্। ঈশ্বরং চিন্তয় সদা। জীব ত্বং শরদঃ শতম্। সেবস্ব সর্বদা গুরুম্। অত্রাসনে উপবিশতু। পুত্রবতী ভব। স্বধর্ম্মং কদাপি ন পরিত্যজত। বালক! ঔষধং পিব। কুবচনং মাবদ। সদ্-গ্রন্থং পঠত সদা।

---

* "চৎলে" "চৎলসনু" "চৎলগে" নচিংবা অম্বজ্ঞ খঙনবা ক্রিয়াবু সংস্কৃতনা হন্দোকপা। তারবদি ধাতুগী মথাদা "লোট" বিভক্তি হাপ্তুনা হন্দোকদবনি। মতুদি :— মহাক চৎলসনু— স গচ্ছতু। নঙ্ চৎলো—ত্বং গচ্ছ। ঐ চৎলে—অহং গচ্ছানি অসিনচিংবা।

নিমন্ত্রণ তৌবা, প্রার্থনা তৌবা (হায়জবা) নচিংবদসু লোট্ বিভক্তি শীজিন্নগনি।

### শব্দার্থঃ

বদ—হায়য়ু। বিস্মরয়—মুল্না থল্লু।
চর—চৎলু (ত্তৌ) চিন্তয়—বাখল ত্তৌ।
কুরু—ত্তৌ। জীব—হিঙউ।
দেহি—পীনৌ। উপবস—সেবা ত্তৌ।
ত্যজ—থাদোকউ। উপবিশন্তু—ফম্মু।
আনয়—পুরকউ। ভব—ওইয়ু।
আগচ্ছন্তু—লেংশিনবিরকউ। নপরিত্যজন্ত—থাদোকনু।
কুরবাণি—ত্তৌগে। পিব—থকউ।
মাকুরু—ত্তৌগনু। পঠন—পাও।
কদাপি—কৈদৌঙৈমনু। সদা—মতম লৈবা খিবিক্তি।

## অনুশীলনী

১। সংস্কৃততা হন্দোকউ।

মতমলৈবখিবিক্তা মীগী ফননবা থল্লু। ধর্ম্মবু থক থাদোকনু। ফত্তবা মীশিংগা তিন্নগনু। মকম অসিদা লাকউ। ঐহাক রামায়ণ পাগে। ফি অমত্তং পীবিয়ু। লমচৎ ফত্তবশিংনা ফত্তবা থবক ত্তৌসনু। নহাক ওঝাবু সেবা ত্তৌ।

২। দা অমসুং ত্যজ্ ধাতুগী লোট্ বিভক্তিগী রূপ হায়য়ু।

## चतुर्थः पाठः

### कर्तृवाच्ये लङ् *

रामः वनमगच्छत्। मार्जारः दुग्ध मपिबत्। राममसेवत लक्ष्मणः। दरिद्रः धनिकं धनं अयाचत। कानने सिंहः अगर्जत्। अर्जुनः गाण्डीवं धनुः अगृह्णात्। अयोध्यायां दशरथनामा राजा आसीत्। अस्पृशत् पाणिना पाणिम्। बालकः मधुरं अभाषत। अपश्यत् रावणः सीताम्। मुर्खः स किमपि न अजानात्। चौरः चौर्य्यं न अत्यजत्। भीमः दुर्य्योधनेन सह गदायुद्धं अकरोत्।

**शब्दार्थः**

| | |
|---|---|
| असेवत—সেবা তৌখি। | कानने—উমংদা। |
| अयाचत—নিরম্মী। | आसीत्—লৈরম্মী। |
| अगर्जत्—ঙংলম্মী। | किमपि—করিগুম্ব অমত্তু। |
| अजायत—পোক্লম্মী। | चौरः—হুরানবনা। |
| धनुः—লীরূংবু। | पाणिना—খুৎনা। |
| मुर्खः—অপঙবনা। | चौर्य्यं—হুরানব থবকপু। |

* অতীতকালগী ক্রিয়াবু সংস্কৃততা অনুবাদ তৌবা তারবদি ধাতুগী মথাদা লঙ্ বিভক্তি হাপ্লুনা তৌগনি।

ওয়োংশিনগদবা :—ওঝা ইবুঙোশিংনা ছাত্রশিংদা লঙ্, লুঙ্গী শীজিন্নকম নিংথিনা খঙহনবিগনি।

## অনুশীলনী

১। সংস্কৃততা হন্দোকউ :—

ঐখোয় চৎলম্মী। মানা মমাগী য়াথং ইল্লম্মী। রামনা রাবণবু জয় তৌরম্মী। নঙনা মঙোন্দা হায়রম্মী। নখোয়না বিদ্যালয়দা চৎলম্মী। এনা মাবু উরম্মী। ঐ তীর্থদা চৎলম্মী। অঙাংশিংনা মপাবু য়েংলম্মী।

২। ধনুষ্, পিতৃ, হনুমৎ, গদা শব্দগী প্রথমা, চতুর্থী, সম্বোধনগী রূপ ইয়ু।

৩। অগৃহ্লাৎ, অপিবৎ, অকরোৎ, আসীৎ, ক্রিয়া পদশিং অসিগী মূল ধাতুগী লট্ বিভক্তিদা রূপ ইযু।

---

# पंचमः पाठः

## कर्तृवाच्ये विधिलिङ्

सदा सत्यं वदेत्। मातुः पितुश्च आदेशं पालयेत्। पूज्यजनेषु भक्तिं कुर्यात्। तेषां उपकारं कुर्यात्। जानीयात् मित्र मापदि। गुरुं सेवेत। कुर्यात् परहितं सदा। सत्पात्रेभ्यः धनं दद्यात्। ईश्वरं चिन्तयेत्। सूर्योदयात् प्राक् शय्यां त्यजेत्। अपथ्यं न भुञ्जीत। रात्रौ न भ्रमेत्। केनापि विवादं न कुर्यात्।

गुरोः आदेशं पालयेत्। आलस्यं यत्नतः परिवर्जयेत्। कुवाक्यं मा वदेत्। यथासमयं कर्म कुर्यात्। अध्यापकः छात्रं शिक्षयेत्। असत्सङ्गं वर्जयेत्।

### शब्दार्थः

सदा—মতম লৈবথিবিক্তা। सूर्योदयात् प्राक्—নুমিৎ থোক্কিন্দা।

पालयेत्—ঙাক্নদবদি। न भ्रमयेत्—কোয়রোইদবনি

जानीयात्—খঙ্গদবনি। विवादं—য়ায়াম থৌয়ায়বু।

परहितं—অতোপ্পগী কান্নগদববু। अपथ्यं—পক্কদবা চীঞ্জাকপু।

सत्पात्रेभ्यः—অফবা মতীকচাবা মীশকশিংদা। आलस्यं—অতনববু।

कुवाक्यं—ফজদবা ৱাহৈবু। यथासमयं—মতমচানা।

शिक्षयेत्—তাকপীগদবনি। वर्जयेत्—থাদোক্কদবনি।

### অনুশীলনী

১। সংস্কৃততা হন্দোকউ:—

মতমচানা থবক তৌগদবনি। করিগুম্বদসু ওইদবা ঙাংলোইদবনি। মকম অফদা চংলোইদবনি। গুরুজনশিংবু থুরুম-গদবনি। কনাগুম্বদসু ফত্তবা ৱাহৈ হায়রোইদবনি।

লনবু, অহাংদা, য়াথংবু, তৌগদবনি, চেকশিন্না, পক্কদবা চীঞ্জাকপু, ওঝানা।

২। আপদ্, ভক্তি, কিম্, শব্দশিংগী ৫ মী অমসুং ষষ্ঠী বিভক্তিগী রূপ ইয়ু।

## षष्ठः पाठः

### कर्तृवाच्ये लृट् *

अहं विद्यालयं गमिष्यामि । सेविष्यन्ते प्रभुं भृत्याः । ग्रहीष्यन्ति करं नृपाः । पुरस्कारं लप्स्यसे त्वम् । संसारे कोवाजनः न मरिष्यति ? दरिद्राः राजानं धनं याचिष्यन्ते । माता पुत्रं पालयिष्यति । आचारवन्तः चिरं जीविष्यन्ति । युयं विद्यालयं यास्यथ । त्वं अहंच गीतं श्रोष्यावः । व्याधाः मृगान् हनिष्यन्ति । वयं कलिकातां द्रक्ष्यामः । रामः मे एकां लेखनीं दास्यति । परिदर्शकः सप्ताहाभ्यन्तरे विद्यालयं परिद्रक्ष्यति । अयं ते पुत्रः विख्यातः चिकित्सकः भविष्यति । अद्य अपराह्ने नृत्यशालायां कतिबालिकाः नर्त्तिष्यन्ति । दशरथः रामचन्द्रस्य वियोगशोकेन मरिष्यति । न्यायाधीशः यथापराधं दण्डं विधास्यति ।

**शब्दार्थः**

विद्यालयम् — স্কুলদা । सेविष्यन्ते — সেবা তৌরগনি ।
करम् — খাজনাবু । "কর" শব্দগী অর্থদি খুৎ, শামু মনাতোবুসু থওনৈ
पुरस्कारम् — মনা মথিনবু । व्याधाः — শা তানবশিংনা ।
द्रक्ष्यामः — য়েংলকনি । लेखनीम् — কলমবু (স্ত্রীলিঙ্গ) ।

---

* ভবিষ্যৎ কালবু সংস্কৃততা অনুবাদ তৌবা তারবদি সংস্কৃতকী লৃট্ বিভক্তিবু ধাতুগী মথাদা হাপ্লগা তৌগনি ।

परिदर्शकः—इनস্পেক্টরনা। विद्यालः—অফাওবা।
विक्रेत्रकः—মাইবা। न्यायाधीशः—বিচার পতিনা।

## অনুশীলনী

১। সংস্কৃততা অনুবাদ তৌ:—

মহাক ঈশিং থকনি। ঐনা ইপাবু সেবা তোজগনি। ঐখোয় অনী কাশী চৎকনি। ঐনা নঙোন্দা কি অমা পীগনি। রাম ঙসি লাক্নি। ওঝাশিংনা হয়েং (শ্বঃ) ঐখোয়বু তম্বিরগনি। ঐবু মহাক্না নীংশিংলক্নি।

২। হন,দৃশ্ ধাতুগী লৃটকী রূপ ইয়ু।

৩। অস্মদ্, লেখনী অমসুং মাতৃ শব্দগী দ্বিতীয়া অমসুং ষষ্ঠী বিভক্তিদা রূপ ইয়ু।

---

# सप्तमः पाठः

क्त, क्तवतु

रामेण मारीचः हतः। दशाननेन हृता जानकी। कालिदासेन अभिज्ञानशकुन्तलं रचितम्। गौरी हिमालयशिखरं आरूढा। विडालेन दुग्धं पीतम्। सेवकाः प्रभुं प्रार्थितवन्तः। सर्वे विद्यार्थिनः गतवन्तः। वयं देहलीनगरीं दृष्टवन्तः। वेदव्यासः महाभारतं कृतवान्। व्याघ्रः मानुषं एकं खादितवान्। सिंहः पशून् हतवान्। उक्तवान् मातरं पुत्रः। युवानः गीतवन्तः।

# अष्टमः पाठः

## तुमून् *

बालकः जलं पातुं नदीं याति। आवां गृहं गन्तुमिच्छावः। राजा तीर्थं धनं दातुं कामयते। भो मित्र! गानं श्रोतुं गमिष्यसि किम्? इमं विपन्नं जनं मां विना रक्षितुं कः समर्थः।

তুমুন্ প্রত্যয় হাপ্লবা ধাতুগী রূপ খরা :—

পীবা—दा + तुमुन् = दातुम्। শেম্বা—सृज् + तुमुन् = स्रष्टुम्।
চাবা—अद् + " = अत्तुम्। পাবা—पठ् + " = पठितुम्।
য়েংবা—दृश + " = द्रष्टुम्। শকপা—गै + " = गातुम्।
তাবা—श्रु + " = श्रोतुम्। থকপা—पा + " = पातुम्।
হূবা—हृ + " = हर्तुम्। কনবা—रक्ष् + " = रक्षितुम्।
চৎপা—गम् + " = गन्तुम्। থাদোকপা-त्यज् + " = त्यक्तुम्।
" —या + " = यातुम्। লানশোক্লবা-युध् + " = योद्धुम्।
লোবা—ग्रह + " = ग्रहीतुम्। হংবা—प्रच्छ् + " = प्रष्टुम्।

---

* তোগদবা থবক অমগী তুংগী মরম অহ্র, থবক (ক্রিয়া) অমনা ওইরবদি মরম ওইরিবা থবক (ক্রিয়া) থওনবা ধাতুগী মথাদা "তুমুন্" প্রত্যয় হাপ্তুনা শীজিন্নগনি। মতুদি মহাক ঈরুজনবগীদমক তুরেল চৎখি—সঃ স্নাতুং নদীং অগচ্ছৎ। রামনা চানবগীদমক চাক থোংলি—রামঃ অত্তুম্ ওদনং পচতি অসিনচিংবা।

# नवमः पाठः

## कर्म्मवाच्यप्रयोगः *

पथिकेन जलं पीयते। अस्माभिः सेव्यतां हरिः। बालकैः पठ्यते पाठः। श्रूयतां मे हितं वचः। कुम्भकारेण घटः क्रियते। सद्भिः सङ्गः सदा कार्य्यः। भक्ष्यतां मधुना भक्ष्यम्। कीर्त्तनीयः सदा हरिः। नदृश्यते नापि श्रूयते। सदा परोपकारं क्रियेत। तेन अहं तिरस्क्रिये। तैः आवां दृश्यावहे। वयं तेन उपक्रियामहे। शिष्यैः गुरवः प्रशस्यन्ते। मया त्वं पूज्यसे। अस्माभिः युवां सेव्येथे। युयं आहूयध्वे नृपेण।

### शब्दार्थः

पीयते—থক্লি ( থকই )। हितम्—কান্নবা।

सेव्यताम्—সেবা তৌ ( তৌসি )। कुम्भकारेण—চফু শাবনা।

---

* সংস্কৃতকী ৱাহৈবু কর্ম্মবাচ্যগী মতোঙদা শীজিন্নগে হায়রবদি কর্ত্তৃ কারকপু তৃতীয়া বিভক্তিদা থোকপা পদ, কর্ম্ম কারকপূ প্রথমা বিভক্তিদা থোকপা পদ ওইহল্লগা ক্রিয়াবুনা কর্ম্মকারককী মথা পোন্না থমগনি, হায়রবদি কর্ম্মকারক অদুগী পুরুষ অমসুং বচন ( মশীং ) গা ক্রিয়াগী পুরুষ অমসুং বচনগা মান্নহনগনি। ধাতু পুন্নমকী মথাদা আত্মনে পদ বিভক্তি হাপকনি। মদুদি :—

प्रयोगे कर्म्मवाच्यस्य तृतीया कर्त्तृकारके।
प्रथमान्तं भवेत् कर्म्म कर्म्माधीनं क्रियापदम्॥
आत्मनेपद प्रयोगः धातुभ्यः सर्वदैवहि॥

| | |
|---|---|
| পচ্যতে—পারি। | সদ্ভিঃ—অফবশিংগা। |
| শ্রূয়তাম্—তাও। | বিদ্বান্—অখঙবা (পণ্ডিত)। |
| ক্রিয়তে—তৌরি (তৌই)। | যশ্মী—থা। |
| কার্য্যৈঃ—তৌগদবনি। | পরোপকারঃ—মীগী মতেঙ। |
| ভক্ষ্যতাম্—চারো। | বিষাদপি—হূগীস্ত। |

## ভাববাচ্যপ্রয়োগঃ *

বালকেন পথি স্থীয়তে। সর্বৈঃ মানুষৈঃ ম্রিয়তে। ময়া সর্পাদ্ভীয়তে। বালিকাভিঃ লজ্জ্যতে। হীনচরিত্রস্য শরীরেণ ক্ষীয়তে।

---

* রাহৈপরেং অমবু সংস্কৃতনা হায়বা অমসুং ইবা তারংদি কর্ত্তৃবাচ্য, কর্ম্মবাচ্য অমসুং ভাব বাচ্যগী রারেংগী মখুংদগী চানগদবা অমনা হায়বা অমসুং ইবা য়াই। মথক্তা কর্ত্তৃবাচ্য অমসুং কর্ম্মবাচ্যগী মরোঙ তাকপ্রে। হৌজিক ভাব বাচ্যগী মরোঙ তাক্লি ঃ ভাব বাচ্যগী রারেংদা কর্ত্তৃকারকপু তৃতীয়া বিভক্তিদা থোকপা পদ ওইহনগনি, ক্রিয়াবুনা মতম পূম্নমক্তা প্রথম পুরুষগী একবচনদা থোকপা পদ ভাক্তা ওইহনগনি। সকর্ম্মক অমসুং অকর্ম্মক ধাতু হায়বা ধাতুগী মথক অনিগী মনুংদগী অকর্ম্মক ধাতুতদা ভাববাচ্যগী রারেং অসি ওইগনি। মরম অসিনা রারেং অসিদা কর্ম্মকারক য়াওরোই। মচুদি ঃ—

> কর্ম্মাভাবো ভাববাচ্যে তৃতীয়া কর্ত্তৃকারকে।
> প্রথম পুরুষস্যৈক বচনংতু ক্রিয়াপদে।
> অকর্ম্মকেষু ধাতুষু প্রয়োগোঽয়ং নিগদ্যতে॥

## दशमः पाठः

( तव्य, अनीय, ल्यप् क्त्वा, शतृ, शानच् अव्यय प्रभृतीनां कतिपयानि उदाहरणानि )

सेवितव्यो महावृक्षः फलच्छायासमन्वितः। कर्तव्यः सञ्चयो नित्यं कर्तव्यो नाति सञ्चयः। कीर्तनीयः सदा हरिः। अतीत्य हि गुणान् सर्वान् स्वभावो मूर्ध्नि वर्त्तते। रात्रिशेषे समुत्थाय चिन्तयेदात्मनो हितम्। स्नात्वा कर्माणि कुर्वीत। यथा खात्वा खनित्रेण वारि विन्दति मानवः। ध्यायतो विषयानस्य सङ्गस्तेषूपजायते। अभ्यासं कुर्वतो विद्या भवति। गुरुं सेवमानः तत्फलं लभते। विषवृक्षोऽपि संवर्द्ध्य स्वयं छेत्तुमसाम्प्रतम्। नहि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगाः। उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः। हीनसेवा न कर्तव्या कर्त्तव्यो महदाश्रयः। आगच्छति यदा लक्ष्मीर्नारिकेलफलाम्बुवत्। निर्गच्छति यदा लक्ष्मीर्गजभुक्तकपित्थवत्। नदीतीरे स्थितो वृक्षो न चिरेण पतिष्यति। संहतिः कार्यसाधिका।

### शब्दार्थः

सञ्चयः—খোমজিনবা। रात्रिशेषे—অহিং মপৈদা।

खात्वा—তোপোক্লগা। खनित्रेण—য়োংপাক্না।

असाम्प्रतम्—মতিক চাদে। सुप्तस्य—তুম্লিবা।

उद्यमेन—হোৎনদনা। मनोरथैः—নীংবতনা।

हीनसेवा-অতোপ্পবু সেবা তৌবা। चिरेण—কুইনা। (কুইরবা মতুংদা, পীম্না)।

# द्वितीयः परिच्छेदः

## प्रथमः पाठः

### प्रथमाविभक्ति प्रयोगः

भूमिरापो नलो वायुः खं मनो बुद्धिरेव च (अभिधेयमात्रे प्रथमा

बन्धो! अत्रागच्छ। (सम्बोधने प्रथमा)

खड्गात् सञ्जायते कामः (उक्ते कर्तरि प्रथमा)

आत्मा न हन्यते हन्यमाने शरीरे (उक्ते कर्मणि प्रथमा)

दशरथ इत्युदाहृता नृपआसीत् (अव्यययोगे प्रथमा)

## द्वितीयः पाठः

### द्वितीया विभक्तिप्रयोगः

तं प्रणमामि शाश्वतनयम्। (कर्मणि द्वितीया)

अध्यापकं प्रति सद्व्यवहारः कार्यः (प्रतियोगे ” )

राममनु जायते कृष्णः (अनुयोगे ” )

धिक् कृपणनाम् (धिग् योगे ” )

विद्यालयं निकषा पुष्करिणी (निकषा ” )

आश्रममन्तरा दस्युः (अन्तरायोगे ” )

श्रममन्तरेण विद्या न लभ्यते (अन्तरेणयोगे ” )

सागरं यावद् गंगा प्रवहति (यावद्योगे ” )

मन्दं मन्दं वहति पवनः ( क्रियाविशेषणे )
सप्ताहं भागवतं शुश्राव ( व्याप्यर्थे )
भक्तिमृते मुक्तिं न लभते ( ऋते योगे )
ज्ञानं विना विफलं जीवनम् ( विना योगे )

---

## तृतीयः पाठः

### तृतीया विभक्ति प्रयोगः

चक्षुषा पश्यति रूपम् ( करणे तृतीया )
खड्गेन कृन्तति काष्ठम् ( करणे )
पुत्रेण सह गच्छति ( सहार्थे )
काञ्चनेन सह गौः दीयते ( सहार्थे )
कृष्णेण कंसः हतः अनुक्ते कर्तरि )
रामेण रावणो हतः ( " " )
दुःखेन रोदिति सीता ( हेत्वर्थे )
अनाहारेण स मृतः ( " )
प्रकृत्या मधुरं मधु ( प्रकृत्यादिभ्यः )
स्वभावेन स सरलः ( " )
वर्षेण धनवान् जातः ( अपवर्गे )

मासेन व्याकरणं अधीतम् ( अपवर्गे )
पुत्रेण हीनं गृहं शून्यम् ( हीनार्थे )
यो नरो विद्यया हीनः स नरः पूज्यते जनैः। ( " )
कर्णेन बधिरः अहम् ( विकृताङ्गे )
चक्षुषा काणः बालकः ( " )
किमनेन व्यर्थालापेन ( वारणार्थे )
अलमति विस्तरेण ( " )
काकैः गृहं जानाति ( उपलक्षणे )
तिलकेन भक्तं पश्यति ( " )
शास्त्रेण विना कः आद्रियते ( विना योगे )
धनेन विना कथं जीवामि। ( " )

---

## चतुर्थः पाठः

### चतुर्थी विभक्ति प्रयोगः

बालकाय मोदकं देहि ( सम्प्रदाने )
भिक्षवे अन्नं ददामि ( " )
फलाय व्रजति वनम् ( तुमर्थे )
पुष्पाय पुष्पवाटिकां गच्छति ( " )
जगद्धिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमो नमः। ( नमो योगे )

नमो धर्माय महते ( नमोयोगे )

नारदाय रोचते कलहः ( रुच्यर्थधातु योगे )

बालकेभ्यः रोचते क्रीड़ा ( " " )

मशकाय धूमः ( निवृत्त्यर्थे )

पापाय प्रायश्चित्तं करोति ( " )

कृष्णाय क्रुध्यति कंसः ( क्रोधार्थधातुयोगे )

साधवे द्रुह्यति खलः ( " " )

---

## पञ्चमः पाठः

### पञ्चमी विभक्ति प्रयोगः

अश्वात् पतति अश्ववारः ( अपादाने )

प्रासादात् प्रेक्षते बालिका ( ल्यप्लोपे कर्मण्यधिकरणे )

वृक्षात् फलं खादति । ( " " )

धनाद् विद्या गरीयसी ( अपेक्षार्थे )

अध्यापकाद् बिभेति छात्रः ( भयार्थधातु योगे )

रामात् त्रस्यति रावणः ( " " )

धर्मात् ऋते स्वर्गं न प्राप्नोति ( ऋते योगे )

पापात् ऋते नरकं न लभते ( " " )

कामात् क्रोधोऽभिजायते ( हेतौ )

पादाघातात् भूमौ पतति ( " )
पुण्यात् अन्यत् धनं नास्ति ( अन्यार्थे )
सत्याद् अन्यत् बलं नास्ति ( " )
गृहात् बहिः सारमेयः तिष्ठति ( बहिस् योगे )
अन्तःपुरात् बहिः द्वारपालः तिष्ठति ( " " )
ज्ञानाद् विना सन्मानं नहि ( विना योगे )
धनाद् विना सुखं नास्ति। ( " " )

---

## षष्ठः पाठः

### षष्ठी विभक्ति प्रयोगः

नारीणां भूषणं पतिः ( सम्बन्धे )
विद्यारूपं कुरूपाणाम् ( " )
धनुर्धराणां अर्जुनः श्रेष्ठः ( निर्धारे )
पक्षिणां काकः धूर्तः ( " " )
रुदतः पितुः चलितः पुत्रः ( अनादरे )
पश्यतो बकमूर्खस्य नकुलैर्भक्षिताः सुताः ( " )
विद्यायाः तुल्यं धनं नास्ति ( तुल्यार्थयोगे )
कुस्वभावस्य समः रिपुः नास्ति ( " " )
रामायणस्य पाठं करोति ( कर्मणि )

महाभारतस्य श्रवणं करोति ( " )
राज्ञां पूजितः पण्डितः ( वर्तमाने क्तप्रत्यय योगे कर्तरि )
महतां अर्चितः हरिः ( " " " )
पयः पानं भुजङ्गानां केवलं विषवर्द्धनम् ( कर्त्तरि षष्ठी )

---

## सप्तमः पाठः

### सप्तमी विभक्ति प्रयोगः

गङ्गायां वर्तते मत्स्यः
सिंहः वसति कानने
} अधिकरणे

गच्छत्सु धावन्तः शीघ्रतमाः
नरेषु क्षत्रियाः शूरतमाः
} निर्धारे

आह्वयति पितरि अपजगाम पुत्रः
निवारयति तस्मिन् जहार चौरः
} अनादरे

चर्म्माणि द्विपिनं हन्ति
दन्तयो हन्ति कुञ्जरम्
} निमित्तात् कर्म्मसंयोगे

उदिते रजनीनाथे कुमुदोऽपि प्रकाशते
सूर्य्येऽस्तं गते पद्मं निमीलति
} भावे

### শব্দার্থঃ

প্রত্যহ—মহৌশানা। পুষ্পবাটিকাম্—লৈকোন্দা।

অনাহারিণ—চাদবনা। ক্রীড়া—শান্নবা।

স্বভাবেন—হৌনশা ওইনা। সপ্তকায়—কাও লৈতনবগীদমক।

ব্যর্থালাপেন—য়ারেয়া। স্থূলঃ—কন্নবা নিপা।

অতিবিস্তরেণ—পাওথোক চাওথোক্লবনা। ময়ূরবাহঃ-শগোল তোংবা নিপা।

ভিক্ষবে—চাক্লিবদা। প্রাসাদান্—মালানদা কাহনা।

বহিঃ (স্)—মপালদা। রজনীনাথী—থানা।

## অনুশীলনী

১। সংস্কৃততা হন্দোকউ :—

অশ্বাংশিংনা উ কারি (আরোহন্তি), য়োংশিংনা উহৈ চারি। থাওনা উশা কক্লি। উমংদা শা-লৈ। নহাক নত্তুনা কৈবু ভাকপিনবা কনা লৈবগে? লাইরবদা কি অমথক পীবিখো। ওঝানা শিষ্যপা লোয়ননা কাশীদা চৎখি। এহাক জাতিদি ব্রাহ্মণনি। হোৎনবা নত্তুনা বিদ্যা ফংদে। মহাক মনা পঙবনি। জ্ঞান নত্তুনা শান্তি লৈতে। কবি মরক্তগী কালিদাস অথোইবনি। কলমনা (লেখন্যা) লাইরিক ইরি।

২। সন্ধি খাইদোকউ :—

ব্যর্থালাপঃ। মন্দাম্ববিতম্। ফলচ্ছায়াসমন্বিতঃ। বিধা দধি। মধ্যাবৈরয়। পরোপকারঃ। সজ্জায়তে। দুর্লভঃ।

७। सन्धि छेदः—

सूर्ये अस्तं गते। जगत् हिताय। पाद आघातेन। धर्मात् ऋते। धनुः धराणाम्। भूमिः आपः। इति उदाहृतः।

---

# तृतीयः परिच्छेदः

## प्रथमः पाठः

### विद्यार्थिनां प्रतिउपदेशः

विद्यार्थिनः सदा स्वं स्वं पाठं अभ्यसेयुः। अध्यापकाः यं यमुपदेशं कुर्वन्ति, तं सर्वथैव गृह्णीयुः। आलस्यं परित्यजेयुः। ब्राह्मे मुहूर्त्ते शय्यां परित्यज्य मलमूत्रादिकं उत्सृज्य स्नात्वा पठेयुः। असत्सङ्गं न कुर्य्युः। मिताहाराः भवेयुः। नृत्यगीतादिकं न पश्येयुः न शृणुयुश्च। यदा अध्यापकाः अध्यापयन्ति तदा आसक्तमनसो भवेयुः।

---

## द्वितीयः पाठः

### सदाचारः

सदाचारो नाम सत्कर्म्मकरणम्। गुरुजनेषु आगतेषु उत्तिष्ठेयुः। गुरुजनान् प्रति नम्राः भवेयुः। असत्संकल्पं परिहरेयुः। कदापि असद्व्यवहारं न कुर्य्युः। कुवाक्यं न वदेयुः। पवित्रभोजनं

कुर्य्युः पवित्रपानं च कुर्य्युः। अपवित्रस्य भोजने पाने च कृते स्वास्थ्यहानिः जायते, मनसो विकारश्च जायते। मनसि विकृते क्रोधादयः उत्पद्यन्ते। पित्रादिगुरुजनानां वाक्यं पालयेयुः।

शब्दार्थः

| | |
|---|---|
| सदा (अव्यय)—মতম নৈব-খিবিক্তা। | सदाचारीनाम— সদাচার কৌবদি। |
| उपदेशम्—পাউভাকপু। | उत्तिष्ठेयुः—তৌগৎকদবনি। |
| सर्व्वथैव—মরম পুম্নমক্তা। | मिताहारः—চাঃনাহেন চাবা। |
| आलस्यम्—অতনববু। | कुवाक्यं—ম্রাতৈ কত্তবব্। |
| प्रक्षाल्य—চামখোক্লগা (হামদোক্লগা)। | पवित्रभोजनं—অপেঃবা চাবা। |
| स्नात्वा—ঈরুজ্জমগা। | स्वास्थ्यहानिः—হকচাং কত্তবা। |
| असत्सङ्गं—কত্তব সঙ্গবু। | आसक्तमनसः—পূক্লীং খিংজিনবা। |

# तृतीयः पाठः

## प्रभातसमयः

प्रभाते शय्यां त्यजेत्। ततः शौचालयं गत्वा मलं त्यजेत्। मृज्जलाभ्यां हस्तपादादिकं शोधयेत्। दन्तधावनं कुर्य्यात्। ततः स्नानं कृत्वा ईश्वरं प्रणमेत्। प्रभातसमयः अतिमनोहरः। अस्मिन् समये पक्षिणः मधुरं कूजन्ति। धीरः समीरणः वहति।

तेन चालितानि नव पल्लवानि दृष्टिं तर्पयन्ति। सरोवरेषु पद्मानि प्रफुल्लं विकसन्ति। तेषां मकरन्दं भ्रमराः पिबन्ति। प्रभाते निर्जने विद्यार्थिनः स्व (निज) पाठं पठेयुः।

# चतुर्थः पाठः

## सन्ध्यासमयः

सन्ध्यासमये पक्षिणः स्वस्वकुलायं समाश्रयन्ति। स्त्रियः गृहे धूपं दीपं दत्वा देवतां प्रणमन्ति। अस्यां वेलायां भूताः प्रेताश्च इतस्ततो विचरन्ति। तदाक्रमणाद् रक्षणाय ईश्वरस्य नाम कीर्तयेत्। अस्मिन् समये कलहं न कुर्यात्। तथा कृति लक्ष्मीः रुष्टा भवति। मङ्गलकर्मणा सन्ध्यासमयं यापयेत्। सवत्सा गावो धावन्ति।

### शब्दार्थः

शौचालयं — জামাঃশংদা।
मृज्जलाभ्यां - লৈপাক অমসুং ঈশিংনা।
समीरणः — নুংশিৎনা।
प्रफुल्लं — মকা ফম্না।
रुष्टा भवति — শাওই।
तथाकृति — মদু ওইরবদি।
मकरन्दं — লৈহৌবু।
कुलायं — মকোন্দা।
इतस्ततः — অকোয়বদা।
कलहं — থৎনববু।
यापयेत् — লেনগদবনি।
मङ्गलकर्मणा - অফবা থবক্না।

# पञ्चमः पाठः

## वसन्तः

एकस्मिन् वत्सरे षड् ऋतवः सन्ति । तेषां नामानि- वसन्तः, ग्रीष्मः, वर्षा, शरत्, हेमन्तः, शिशिरः इति । द्वौद्वौ मासौ एकः एकः ऋतुर्भवति । तेषु फाल्गुनचैत्रमासौ वसन्तः भवति । अस्मिन् ऋतौ वायुः मन्दं मन्दं वहति । आकाशं निर्मलं जायते । आकाशे नक्षत्राणि शोभन्ते । तरुलतादयः सर्वे नवपल्लवेन मुकुलेनच मनोहराः भवन्ति । कोकिलाः आम्रशाखाया मुपविश्य आम्रमुकुलं भक्षयन्ति । तेषां कुहुरवेण विरहिजनानां मानसं परितापयन्ति । अत्र शैत्यस्य, औष्ण्यस्यच अधिकता नास्ति । वसन्ते सर्वशस्यानां पत्रशातनं जायते ।

# षष्ठः पाठः

## ग्रीष्मः

वसन्तात् परं ग्रीष्मः समायाति । वैशाख-ज्येष्ठमासौ ग्रीष्म ऋतु भवति । अस्मिन् काले सूर्यः प्रखरतापो भवति । तस्य तापेन जनाः मध्याह्ने वहिर्गन्तुं न समर्थाः भवन्ति । पक्वानि सुमिष्टानि आम्राणि खादन्ति मानवाः । जलशून्येषु जलाशयेषु वर्त्तमानाः जलचराः क्लिश्यन्ति । नीराणि मालिन्येन अव्यवहार्य्याणि भवन्ति । ग्रीष्मकाले दिनं दीर्घं भवति ।

## सप्तमः पाठः

### वर्षा

आषाढ़ः श्रावणः द्वौ मासौ वर्षासमयः भवति। वर्षासु गगनमण्डलं मेघाच्छन्नं भवति। अस्मिन् समये महती वृष्टि भवति। पृथिवी जलप्लाविता भवति। नदाः नद्यश्च जलपूर्णाः भवन्ति। मध्ये मध्ये विद्युत् प्रकाशते। ततो वज्रपातो भवति। सर्वे पन्थानः कर्दमाक्ताः। वर्षासु भेकाः (दर्दुराः) मोदन्ते। ते नवसलिले सानन्दं रमन्ते शब्दायन्तेच। कर्षकाः कार्यान्तरं विहाय धान्यरोपणं कुर्वन्ति। मलिनं जलं निर्मलं कृत्वा पातव्यम्।

## अष्टमः पाठः

### शरत्

वर्षायाः अनन्तरं शरत आयाति। भाद्रमासः, आश्विनमासः इति द्वौ मासौ शरद् भवति। इहहि नभसि मेघः नास्ति। अतएव नभो निर्मलं भवति। सर्वासां दिशां सर्वेषां जलानांच निर्मलता जायते। विकसितानां पद्मानां कुमुदानां च सौन्दर्य्यं दृष्ट्वा मानवानां मनः प्रफुल्लं भवति। क्षेत्राणि शस्यपूर्णानि भवन्ति। अस्मिन् काले क्रमशः सूर्य्यतापस्य ह्रासः भवन्ति। शस्यपूर्णानि क्षेत्राणि, निर्मलजलानि, प्रसन्नं नभश्चावलोक्य केषां मनसि आनन्दः न जायते ?

## नवमः पाठः

### हेमन्तः

कार्तिकमासः आग्रहायणमास, इति द्वौ मासौ हेमन्त ऋतुः भवति समयेऽस्मिन् मनुष्याणां शरीराणि शैत्यनिवारणाय वस्त्रेण आवृतानि भवन्ति। आकाशं नीहाराच्छन्नं च भवति। सूर्य्यतापः सर्वेषां सुख सेव्यो भवति। क्षेत्रेषु धान्यानि सुपक्कानि भवन्ति। अस्मिन समये रात्रिमानं दीर्घं भवति। दिनमानं ह्रस्वम्।

## दशमः पाठः

### शीतः

पौषः माघश्च इति द्वौ मासौ शीत ऋतुः भवति। अस्मिन समये शीतल-वायुवेगेन शीतं वर्द्धते। अग्निसेवनं आतपसेवनं च कुर्वन्ति मानवाः। शीतकाले निरावरणदेहेन कोऽपि स्थातुं नशक्नोति तस्मात् कम्बलादिकं व्यवहरन्ति। अस्मिन् ऋतौ अग्निसेवन हितकरं भवति।

### शब्दार्थः

बत्सरे—ছৌদা।
मन्दं मन्दं—ভপ্না ভপ্না।
ग्रीष्मः—ওয়াংবা মতম।
निर्मलता—ভক ভকবগী মতো।
प्रखरतापः—টৈশা কনবা।
क्षेत्राणि—দবুকশিং।

নীরাজি—ঈশিং পুম্নমক ।   হ্রাসঃ—ময়েং তাবা ।
বর্ষা—নোংজু থা ।   আবৃতানি—কুপশিনবা ।
পন্থানঃ—লম্বী পুম্নমক ।   সুপক্কানি—নীংথিনা মুমবা ।
কর্দমাক্তাঃ—ইলথোম থোকপা ।   রাত্রিমান—অহীংগী চাং ।
ভেকাঃ (দর্দুরাঃ) হঙেঙাইশিংনা   শৈত্যনিবারণায়-অইংবা কোক্লনবা ।

## অনুশীলনী

১ । সংস্কৃততা হন্দোকউ:—

বসন্ত, ঋতুগী নিংথৌনি। বসন্তদা উনা কেল্লি। কোকিল-শিংনা হৈনৌ মশাদ কমছনা খোংলি। ওল্লাং থাদা লুংথিলগী মতম শাংই। পুঞ্জিশিংদা থম্বাল শাংলি। অভাং অসি কুইনা পুন্সিসনু।

২। সন্ধি থাইদোকউ:—

নির্জনে। গাবো ধাবন্তি। বহির্গন্তুম্। ধান্যরোপণম্ কুর্বন্তি। সময়েঽস্মিন্। সানন্দম্।

# चतुर्थः परिच्छेदः

## प्रथमः पाठः

विद्या सर्वैः उपार्जनीया। विद्यासमं धनं नास्ति। विद्याहीनः नरः पशुः। विद्वत्सभायां विद्यावानेव पूज्यते। विद्या केनापि आच्छिद्य ग्रहीतुं नशक्यते। विद्या यावद् दीयते तावत् वर्द्धते। प्रवासे विद्या मनुष्याणां मित्रं भवति। यः बाल्ये विद्यां न अभ्यस्यति स्म, स चरमे वयसि दुःखं प्राप्नुयात्। विद्याकामधेनुः यस्यास्ति स एव सुखी। कणशः कणशः विद्या उपार्जनीया। विद्योपार्जने कर्तव्ये सति सच्चरित्राः अल्पाहाराः भोगविलासरहिताः भवेयुः। राजा स्वदेशे पूज्यते, विद्वांस्तु स्वदेशे परदेशेऽपि पूज्यते।

### शब्दार्थः

उपार्जनीया—তানশিনগদবনি।
पूज्यते—পূজা তৌই।
आच्छिद्य—মুন্দুনা।
प्रवासे—লাংৈফদা।
यावत्—অদুক্কি মতোক।
चरमेबयसि—মমৈগী চহি মতাঙদা।
कणशः कणशः—খজিক খজিক ওইনা।
अल्पाहारा—খজিক খজিক চাবা।

### অনুশীলনী

১। সংস্কৃততা হন্দোকউ :—

মহৈ ( বিদ্যা ) গা মাঙ্গবা লন নৈতে। মহৈ, কনানসু

মুন্দুনা লৌখিবা ওমদে। মহৈ কথোকলিবা অহুকী মতৌক হেনগৎ-লকই। মহৈ হৈবা মীবু মহৈবাক্তস্থ মীহৈবাক্তস্থ পুজা তৌই।

২। সন্ধি খাইদোকউ :—

সচ্চরিত্রাঃ, অল্পাহারাঃ, বিদ্বাংস্তু, পরদেশেঽপি, আচ্ছিত্ত।

---

# द्वितीयः पाठः

## धर्म्मः

धर्म्मः सदा रक्षणीयः। संसारवृक्षस्य धर्म्म एव महाफलम्। धर्म्मेण हीनाः पशुभिः समानाः। धर्म्मः जीवने मरणेऽपि जीवं न जहाति। अन्यत्तु सर्वं शरीरेण सह नश्यति। येन धर्म्मः रक्ष्यते सः धर्म्मेण रक्ष्यते।

# तृतीयः पाठः

## आलस्यम्

आलस्यं सदा परिवर्जयेत्। एकघटिकया यत्कर्म्म सम्पादयितुं शक्यं तत् कतिपयैः अहोभिरपिसम्पादयितुं अलसाः जनाः न शक्नुवन्ति। आलस्यं हि जनानां महान् रिपुः। अलसानां बुद्धिः सुतीक्ष्णापि कुण्ठिता भवति। तेषां बुद्धिः सार्थिका न भवति। अलसाः कदापि उन्नताः न भवेयुः।

# चतुर्थः पाठः

## क्रोधः

क्रोधः महान् दोषः। क्रोधाधीनानां नराणां विनाशः भवति। पुरा कौरवपाण्डवानां यद् युद्धमभूत्, तस्य मूलं क्रोध एव। क्रुद्धानां जनानां हिताहितविचारो नास्ति। धीमतामपि बुद्धिः क्रोधेन भ्रमयति। क्रोधात् विषादिकं पीत्वा प्राणानपि त्यजन्ति। तस्मात् भूतिमिच्छता पुरुषेण क्रोध आलस्यं च परित्याज्यम्।

### शब्दार्थः

वर्जनीयः—ঙাক্কদবনি। एकघटिकया—পুং অমদা।

न जहाति—থাদোক্তে। कुपितो भवति—পংই।

रिपुः—য়েক্কবা। उन्नतां—চাওখৎপা।

## অনুশীলনী

১। সংস্কৃততা হন্দোকউ:—

অতনবা নিপাশিংনা মতমগী মমল থত্তদে। অতনবা হায়বসি মীওইবশিংগী অচৌবা দোষনি। ওল্লবদি কদোইদসু চাওখৎপা য়াদে। অসিগুম্না অশাওবা হায়বসিসু কত্তবা অমনি। অশাওবা মীগী বুদ্ধি মাঙই। অশাওবা অমসুং অতনববু থাদোক্কদবনি।

২। বুদ্ধি, অহন্, বিষ-শব্দগী ১মা, ৪র্থী, ৭মীদা রূপ হায়য়ু।

## पञ्चमः पाठः

### वानरसूचीमुखकथा

अस्ति कस्मिंश्चित् पर्वतैकदेशे वानरयूथम्। तच्च कदाचित् हेमन्तसमये अतिकठोरवातसंस्पर्शवेपमानकलेवरं तुषारवर्षोद्धतप्रवर्षघनधारानिपातसमाहतं न कथञ्चित् शान्तिमगच्छत्। अथ केचित् वानराः वह्निकणसदृशानि गुञ्जाफलानि अवचित्य वह्निवाञ्छया फुत्कुर्वन्तः तस्थुः। अथ सूचीमुखो नाम पक्षी तेषां तं वृथायासमवलोक्य प्रोवाच—"भोः! सर्वे मूर्खाः यूयं, नैते वह्निकणाः, गुञ्जाफलानि एतानि, तत् किं वृथाश्रमेण, न एतस्मात् शीतरक्षा भविष्यति। तत् अन्विष्यतां कश्चित् निर्वातो वनप्रदेशो गुहा वा गिरिकन्दरं वा। अद्यापि साटोपा मेघा दृश्यन्ते"। अथ तेषामेकतमो वृद्धवानरः तमुवाच—"भो मूर्ख! किं तव व्यापारेण, तद् गम्यताम्" सोऽपि तमनादृत्य भूयोऽपि वानरान् अनवरतमाह—'भोः! वृथा क्लेशेन" अथ यावदसौ न कथंचित् प्रलपन् विरमति तावदेकेन वानरेण व्यर्थश्रमत्वात् कुपितेन पक्षाभ्यां गृहीत्वा शिलायामास्फालित उपरतश्च।

उपदेशोहि मूर्खाणां प्रकोपाय न शान्तये।
पयःपानं भुजंगानां केवलं विषवर्द्धनम्॥

### शब्दार्थः

यानयुगम्—য়োংগী মপৈ।
कलेवरं—হকচাং।
गुञ्जाफलानि—চওনিং মহৈশিং।
फुत्कुर्वन्तः—ফু ফু কামহনা
वृथाश्रमेण—অরেম্বদা রাহনা।
आस्फालितः—শাইহংখি।

### অনুশীলনী

১। ৱারি অসি নরোম্না ইয়ু।

২। ৱারি অসিদগী করি পাউতাক ফংই।

---

## षष्ठः पाठः

### ब्राह्मण धूर्तकथा

कस्मिंश्चित् अधिष्ठाने मित्रशर्मा नाम ब्राह्मणः प्रतिवसतिस्म। कदाचित् माघमासे सौम्यानिले प्रवाति, मेघाच्छादिते गगने, मन्दं मन्दं प्रवर्षति पर्जन्ये, पशुप्रार्थनाय किञ्चिद् ग्रामान्तरं गत्वा तेन कश्चिद् यजमानो याचितः। "भो यजमान! आगामिन्याममावस्यायां अहं यक्ष्यामि यज्ञम्। तत् देहि मे पशुमेकम्"। अथतेन तस्य शास्त्रोक्तः पीवरतनुः पशुः प्रदत्तः। सोऽपि तं समर्थमितश्चेतश्च गच्छन्तं विज्ञाय स्कन्धे कृत्वा सत्वरं स्वपुराभिमुखः प्रतस्थे। अथ तस्य गच्छतो मार्गे

त्रयो धूर्त्ताः छागलपाठः सम्मुखा बभूवुः। तैश्च सद्वृत्तं पीवरतनुं स्कन्धे आरूढमवलोक्य मिथोऽभिहितम्, "अहो! अस्य पशोः भक्षणात् अद्यतनीयो दिवसपातो व्यर्थतां नीयते, तत् एनं वञ्चयित्वा पशुम् आदाय प्रीतत्राणं कुर्मः"। अथ तेषामेकतमो वेशपरिवर्तनं विधाय सम्मुखो भूत्वा अपमार्गेण तं ब्राह्मणंऊचे भो ब्राह्मण! किमिदं जनविरुद्ध हास्यकार्यं क्रियते। यदेष सारमेयोऽपवित्रः स्कन्धाधिरूढो नीयते। ततः तेन सकोप अभिहितम्, 'अहो! किमन्धो भवान्? यत् पशुमिमं छागलं सारमेयं प्रतिपादयसि। सोऽब्रवीत्, "ब्रह्मन्! त्वया कोपः न कार्यः यथेच्छया गम्यताम्" इति। अथ यावत् किञ्चित् अध्वनोऽन्तरं गच्छति, तावत् द्वितीयो धूर्त्तः सम्मुखे समुपेत्य तमुवाच। 'भो ब्रह्मन्! वत्स! वत्स यद्यपि वल्लभोऽयं ते मृतवत्सः, तथापि स्कन्धमारोपयितु मयुक्तम्। अथ असौ सकोपमिदमाह 'भोः। किमन्धो भवान्? यत् पशुं मृतवत्सं वदसि?" सोऽब्रवीत्—"भगवन्। कोपं मा कुरु, अज्ञानात् मया अभिहितं तत् त्वमात्मरुचिं समाचर" इति। अथ यावत् स्तोकं वनान्तरं गच्छति तावत् तृतीयोऽन्यवेशधारी धूर्त्तः सम्मुखः समुपेत्य तमुवाच— "भो! अयुक्तमेतत्। यत् त्वं रासभं स्कन्धाधिरूढं नयसि तत् त्यज्यताम् एषः यावद् अन्येन केनापि न दृश्यते"। अथ असौ तं पशुं रासभं मन्यमानो भयात् भूमौ

प्रविश्य स्वगृहमुद्दिश्य प्रपलायितः। ततः ते त्रयो मिलित्वा तं पशुं आदाय यथेच्छया भक्षितुमारब्धाः।

"बहवो न विरोद्धव्या दुर्जयाहि महाजनाः।
स्फुरन्तमपि नागेन्द्रं भक्षयन्ति पिपीलिकाः॥

---

## सप्तमः पाठः

### बकनकुलकथा

अस्ति कस्मिंश्चिद् वने कश्चिद् वटपादपः। तस्य कोटरे एकः कृष्णसर्पः प्रतिवसतिस्म। स च बकशावकान् भक्षयित्वा कालं नयतिस्म। अथैकदा कश्चिद् बकोऽतीव दुःखितो बाष्पाकुलनयनः कञ्चित् कुलिरकमवदत् भोः। कथय कृष्णसर्पस्य विनाशाय उपायमेकम्, तच्छ्रुत्वा कुलीरकोऽवदत् यूयं नकुलविवरात् सर्पकोटरं यावत् मत्स्यान् त्रिकिरत। ततो नकुलः तान् मत्स्यान् भक्षयित्वा तेन पथा सर्पविवरं गमिष्यति दुष्टसर्पं विनाशयिष्यतिच। तथाकृते नकुलो मत्स्यानुसरणं कृत्वा कृष्णसर्पं विनाशितवान्। पश्चात् स नकुलो वृक्षमारुह्य सर्वान् बकशावकान् भक्षितवान्। तथाचोक्तम्

"उपायं चिन्तयेत् प्राज्ञस्त्वपायमपि चिन्तयेत्"

### শব্দার্থঃ

বটপাদপঃ—বট পাম্বী। বকস্থাবকাশান্—উরোক মচাশিংবু।

কৃষ্ণসর্পঃ—য়াম্না হু কববা লিন্। নকুলবিবরাৎ—খৈরোইগী মকোল অহোবদগী।

বিকিরন—চাইথোকউ। ভক্ষয়িত্বা—চাথোক্লগা।

নখাঙ্কিতানি—মহু তোঙ্খবদ। অগ্রাগম্—মাঙ্গদবু।

কুট্টিকেন্—রায়থুদা। আকৃষ্য—কাথংলগা।

## অনুশীলনী

১। রারী অসি নরোন্দা টয়ু।

২। সন্ধি থাইদোকউ :—

কস্মিন্চন্। বকোঽনীব। মচ্চঞ্চুত্বা।

৩ "পথা" হায়বা পদ অসি করি শব্দগী থোকপনো হায়বদু উৎলগা মাগী প্রথমাগী একবচনদা থোকপা মশক অদু তাক্লম্।

## अष्टमः पाठः

### एकोदर पृथग्ग्रीव भारण्ड पक्षिकथा

कस्मिंश्चित् सरोवरे भारण्डनामा पक्षी एकोदरः पृथग्ग्रीवः प्रतिवसति स्म। तेनच समुद्रतीरे परिभ्रमता किञ्चित् फलम् अमृतकल्पं तरङ्गाक्षिप्तं सम्प्राप्तम्। सोऽपि भक्षयन् इदमाह "अहोः बहूनि मया अमृतप्रायाणि समुद्रकल्लोलाहृतानि फलानि भक्षितानि। परमपूर्वोऽस्य आस्वादः, तत् किं पारिजात-हरिचन्दनतरुसम्भवं किंवा किंचित् अमृतमयफलम् अव्यक्तेनापि विधिना पतितम्"। एवं तस्य ब्रुवतो द्वितीयमुखेन अभिहितम् "भो! यदि एवं तत् ममापि स्तोकं प्रयच्छ येन जिह्वासौख्यम् अनुभवामि"। ततो विहस्य प्रथमवक्त्रेण अभिहितम्, "आवयोः तावदेकं उदरं एका तृप्तिश्च भवति। तत् किं पृथग्भक्षितेन, वरमनेन शेषेण प्रिया तोष्यते"। एवमभिधाय तेन शेषं भारण्डयाः प्रदत्तं, सापि तत् आस्वाद्य प्रहृष्टतमा आलिङ्गनचुम्बनसम्भावनानेकचाटुपरा बभूव। द्वितीयं मुखं तद्दिनादेव प्रभृति सोद्वेगं सविषादञ्च तिष्ठति। अथ अन्येद्युः द्वितीयमुखेन विषफलं प्राप्तम्। तद् दृष्ट्वा अपरमाह,— "भो! पुरुषाधम! निरपेक्ष! मया विषफलम् आसादितम्। तत् तवापमानात् भक्षयामि"। अपरेण अभिहितम्,— मूर्ख! मा मा एवं कुरु, एवं कृते द्वयोरपि विनाशो

भविष्यति । अथ एव वदता तेन अपमानेन फलं भक्षितम् किं बहुना, द्वौ अपि विनष्टौ ।

"असंहता विनश्यन्ति भारण्डा इव पक्षिणः" ।

शब्दार्थः

वृकोदरः — মবুক আঙ্বা পানবা । तरङ्गाक्षिप्तम् - ঈথক্না চেনখৎলকপা ।
स्तोकम् — খজিক্কং । अन्येद्युः - অতোপ্পা নুমিৎ অমদা ।
जिह्वासौख्यम् — লৈ য়েংগী অপেনবদু । निरपेक्ष — অতোপ্পবু য়েংদবা ।

## অনুশীলনো

১। সংস্কৃতত হন্দোকউ :—
রাশ্রি অসি মৈতৈলোন্দা মপু কানা হৈব্রু ।

২। মথাদা হৈরিবা পদশিং অসিগী মশক তাকউ ।
सोद्वेगम् । एवंकृते । तवापमानात् । प्रघनमुखेन । द्वयोरपि ।

৩। রারি অসিগী পাউতাক করিনো ?

## नवमः पाठः

### कच्छपहंसकथा

अस्ति कस्मिंश्चित् जलाशये कम्बुग्रीवो नाम कच्छपः। तस्य संकटविकटनाम्नी मित्रे हंसजातीये परमस्नेहकोटिमाश्रिते नित्यमेव सरस्तीरमासाद्य तेन सह अनेकदेवर्षिमहर्षीणां कथाः कृत्वा अस्तमयवेलायां स्वनीडसंश्रयं कुरुतः। अथ गच्छता कालेन अवृष्टिवशात् सरः शनैः शोषमगमत्। ततस्तद्दुःखदुःखितौ तौ ऊचतुः—"भो मित्र! जम्बालशेषमेतत्सरः सञ्जातं तत् कथं भवान् भविष्यतीति व्याकुलत्वं नो हृदि वर्तते"। तच्छ्रुत्वा कम्बुग्रीव आह—भोः साम्प्रतं नास्ति अस्माकं जीवितव्यं जलाभावात्। तथापि उपायश्चिन्त्यतामिति। उक्तञ्च—

त्याज्यं न धैर्यं विधुरेऽपि काले
धैर्यात् कदाचिद्गतिमाप्नुयात् सः।
यथा समुद्रेऽपि पोतभङ्गे
सांयात्रिको वाञ्छति तर्तुमेव॥

अपरञ्च—

मित्रार्थे बान्धवार्थे च बुद्धिमान् यतते सदा।
जातास्वापत्सु यत्नेन जगादेदं वचो मनुः॥

तत् आनीयतां काचित् दृढरज्जुः लघु काष्ठं वा, अन्विष्यतां प्रभूतजलसनाथं सरो येन मया मध्यप्रदेशे दन्तैर्गृहीते सति युवां को

भागयोः तत् काष्ठं मया सहितं संगृह्य तत्सरो नयथः"। तौ ऊचतुः— "भो मित्र ! एवं करिष्यावः, परं भवता मौनव्रतेन स्थातव्यम्, नोचेत् तव काष्ठात् पातो भविष्यति"। तथा अनुष्ठिते, गच्छता कम्बुग्रीवेण अधोभागव्यवस्थितं किञ्चित् पुरमालोकितं, तत्र ये पौरास्ते तथा नीयमानं विलोक्य सविस्मयमिदमूचतुः— "अहो ! चक्राकारं किमपि पक्षिभिः नीयते, पश्यत पश्यत" अथ तेषां कोलाहलमाकर्ण्य कम्बुग्रीव आह— "भोः ! किमेष कोलाहलः" इति अर्द्धोक्ते पतितः पौरैः खण्डशः कृतश्च।

**शब्दार्थः**

कच्छपः—থঙ্গু।　　अवृष्टिवशात्—নোং তাদবদগী।

जम्बालशेष —লৈথোমদ মঙায়রবা　　कोटिभागयोः—মতোন অনিদা।

चक्राकारम्—কোইরক কোয়বা।　　सविस্मयम्—অঙকপগা লোয়ননা।

## अनुशीलनी

১। সংস্কৃতদা হন্দোকউ :—

করিগুম্বা পুখ্রী অমদা থেঙ্গু অমা লৈরম্মি। অচুম্মক উপায় অমতংদি থনবিয়ু। অদোম্না তুমিন্না লৈবিগদবনি। মথোয়গী নিন খোংবদু তারগা কম্বুগ্রীবনা হায়রম্মি।

২। সন্ধি খাইদোকউ :—

उपायश्चिन्त्यताम्। अर्द्धोक्ते। दन्तैर्गृहीते। सरस्तीरमासाद्य।

১। ব্যাখ্যা অসিদগী করি পাউতাক ফংই।

# दशमः पाठः

## नीतिपाठः

अजरामरवत् प्राज्ञो विद्यामर्थं च चिन्तयेत् ।
गृहीत इव केशेषु मृत्युना धर्ममाचरेत् ॥ १ ॥
धनिकः श्रोत्रियो राजा नदी वैद्यस्तु पंचमः ।
पंच यत्र न विद्यन्ते तत्र वासं न कारयेत् ॥ २ ॥
सेवितव्यो महावृक्षः फलच्छायासमन्वितः ।
यदि दैवात् फलं नास्ति छायाकेन निवार्यते ॥ ३ ॥
भूमेर्गरीयसी माता स्वर्गादुच्चतरः पिता ।
जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी ॥ ४ ॥
संसारविषवृक्षस्य द्वे एव मधुरे फले ।
काव्यामृतरसास्वादः सङ्गमः सज्जनैः सह ॥ ५ ॥
गुरोर्यत्र परीवादो निन्दावापि प्रवर्त्तते ।
कर्णौ तत्र पिधातव्यौ गन्तव्यं वा ततोऽन्यतः ॥ ६ ॥
आपत् कालेतु संप्राप्ते यन्मित्रं मित्रमेव तत् ।
वृद्धिकालेतु संप्राप्ते दुर्जनोऽपि सुहृद्भवेत् ॥ ७ ॥
यथामिषं जले मत्स्यैर्भक्ष्यते श्वापदैर्भुवि ।
आकाशे पक्षिभिश्चैव तथा सर्वत्र वित्तवान् ॥ ८ ॥
अर्थार्थी यानि कष्टानि मूढोऽयं सहते जनः ।
शतांशेनापि मोक्षार्थी तानिचेन्मोक्षमाप्नुयात् ॥ ९ ॥

स्वभावो नोपदेशेन शक्यते कर्तुमन्यथा ।
सुतप्तमपि पानीयं पुनर्गच्छति शीतताम् ॥ १० ॥
स्वच्छन्दवनजातेन शाकेनापि प्रपूर्यते ।
अस्य दग्धोदरस्यार्थे कः कुर्यात् पातकं महत् ॥ ११ ॥
वन्ध्या नारी न जानाति पुत्रप्रसववेदनाम् ।
मूर्खो नरो न जानाति विद्यार्जनपरिश्रमम् ॥ १२ ॥
जातमात्रं न यः शत्रुं व्याधिञ्च प्रशमं नयेत् ।
महाबलोऽपि तेनैव वृद्धिं प्राप्य स हन्यते ॥ १३ ॥
वनानि दहतो वह्नेः सखा भवति मारुतः ।
स एव दीपनाशाय कृशे कस्यास्ति सौहृदम् ॥ १४ ॥
यस्य न ज्ञायते शीलं न कुलं नच संश्रयः ।
न तेन सङ्गतिं कुर्यादित्युवाच बृहस्पतिः ॥ १५ ॥

### शब्दार्थः

परीवादः—ফত্তবা ৱৈজ্জিনবা । पिशाचघ्नौ—মেনপদবনি ।
वन्ध्यानारी—অথুংবা নুপী । शाकेनापि—শরুক চাম থোক-পগী অমনস্থ ।

### अनुशीलनी

১। শৈরেংশিং অসি চীন্না পুথোকউ ।
২। ৩ শুবা, ৫ শুবা, ১১ শুবা শ্লোককী ভাবার্থ তাকউ ।
৩। ১০ শুবা, ১৪ শুবা শ্লোককী অর্থ হায়ু ।